International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(4): 97-98

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(4): 97-98
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-05-2018
Accepted: 21-06-2018

अनीता कुमारी
अनीता कुमारी – संस्कृत विभाग, महात्मा गाँधी स्नातकोत्तर, महाविद्यालय फिरोजावाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
अनीता कुमारी
अनीता कुमारी – संस्कृत विभाग, महात्मा गाँधी स्नातकोत्तर, महाविद्यालय फिरोजावाद, उत्तर प्रदेश, भारत

संस्कृत साहित्य में कल्प का स्थान

अनीता कुमारी

प्रस्तावना

भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास का अध्ययन करने से हमें ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण वेदांग साहित्य में 'कल्प' का स्थान प्राथमिक है। यज्ञीय विधियों का प्रतिपादन इस वेदांग में किया गया। इस शब्द का अर्थ भी इसी प्रकार प्रस्तुत किया गया है – 'वैदिक कर्मों को क्रमबद्ध व्यवस्थित कल्पना करने वाला शास्त्र कल्प है' (कल्पो वेदविहितानां कर्मणामनुपूर्व्येण कल्पना शास्त्रम्)। सायण ने भी 'कल्प' का लगभग यही अर्थ किया है – 'यज्ञीय प्रयोगों का समर्थन तथा प्रतिपादन करने के कारण से 'कल्प' है।[1] ये कल्पसूत्र अपने विषय–प्रतिपादन में ब्राह्मणों और आरण्यकों से सम्बद्ध होने के कारण प्राचीनतम भी माने जाते हैं। प्रत्येक संहिता के अलग–अलग कल्पसूत्र प्राप्त होते हैं। हिन्दू धर्म के समस्त कर्म, संस्कार, अनुष्ठान तथा रीति नीतियाँ प्रायः कल्पसूत्रों से ही होने के कारण भातीय संस्कृति के स्वरूप को समझने के ये एकमात्र अवलम्बन हैं। कल्प सूत्रों का आधारशिला कर्मकाण्ड है।

कल्पसूत्र चार प्रकार के हैं: श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र तथा शुल्बसूत्र।

श्रौतसूत्र

इनका मुख्य विषय वेद प्रतिपादित विभिन्न महत्त्वपूर्ण यज्ञों के विधि विधानों को सूत्र रूप में संकलित करना है। इन्हीं श्रौत सूत्रों में दक्षिण, आह्वनीय तथा गार्हपत्य – इन तीनों अग्नियों की स्थापना का विधान भी प्राप्त होता है, जिनमें विभिन्न प्रकार के हविर्यज्ञ तथा सोमयज्ञ सम्पन्न किए जाते थे। प्रमुख श्रौत सूत्र ये हैं। ऋग्वेदीय–आश्वलायन तथा शांखयन श्रौतसूत्र। कृष्ण–यजुर्वेदीय–बौधयन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी, वैखानस, भारद्वाज, मानव एवं वाराह श्रौतसूत्र। शुक्ल यजुर्वेदीय–कात्यायन श्रौतसूत्र। सामवेदीय – आर्षेय अथवा मशक, लाटयायन, द्राह्ययन तथा जैमिनीय श्रौतसूत्र। अथर्ववेदीय – वैतान श्रौतसूत्र।

गृह्यसूत्र

मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक के कर्त्तव्यों तथा अनुष्ठानों का सांगोपांग वर्णन गृह्यसूत्रों में प्राप्त होता है। ये गृह्यसूत्र नित्यप्रति किए जाने वाले धार्मिक विधानों के प्रयोग, विभिन्न गृह्य यज्ञों तथा महोत्सवों की विधियों का वर्णन करते हैं। मनुष्य के विभिन्न सोलह संस्कारों, पचमहायज्ञों, त्रिऋणों, सात पाकयज्ञों, गृहनिर्माण, गृह प्रवेश आदि का विस्तृत विधान गृह्यसूत्रों में किया गया है। रीति एवं उपचार का वर्णन इनका मुख्य विषय है। संस्कारों के सम्बन्ध में जो नियमों की सूची प्राप्त होती है। उससे भारतीय जीवन की पवित्रता का भली भाँति परिचय प्राप्त हो जाता है। प्रमुख गृह्यसूत्र ये हैं। ऋग्वेदीय – आवश्लायन, शांखायन तथा कौषीतकी अथ्वा शाम्बव्य गृह्यसूत्र। कृष्णयजुर्वेदीय – बौधायन, भारद्वाज, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशि, वैखानस, अग्निवेश्य, मानव, वाराह तथा काठक गृह्यसूत्र। सामवेदीय – गोभिल, खादिर तथा जैमिनीय गृह्यसूत्र। शुक्लयजुर्वेदीय पारस्कर गृह्यसूत्र अथर्ववेदीय – कौशिक गृह्यसूत्र।

धर्मसूत्र

विभिन्न पारमार्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक कर्त्तव्यों, चारों वर्णों तथा चारों आश्रमों के कर्तव्य, विवाह, उत्तराधिकार, प्रायश्चित आदि सामाजिक नियमों एवं राजधर्म, प्रजाधर्म आदि विषयों का विवेचने धर्मसूत्रों में प्राप्त होता है।

अतः धर्मसूत्र गृह्यसूत्रों के ही एक अनुभाग के सदृश्य ज्ञात होते हैं। परवर्ती युग में इन्हीं धर्मसूत्रों से याज्ञवल्क्यस्मृति, मनुस्मृति आदि स्मृति ग्रन्थों का विकास हुआ। धर्मसूत्र सम्बन्धी बहुत सा साहित्य लुप्त हो गया है। प्रमुख धर्मसूत्र ये हैं ऋग्वेदीय – वसिष्ठ एवं विष्णु धर्मसूत्र। कृष्ण यजुर्वेदीय बौधायन, आपस्तम्ब तथा हिरण्यकेशि धर्मसूत्र। शुक्लयजुर्वेदीय – हारीत तथा शंख धर्मसूत्र। सामवेदीय – गौतम धर्मसूत्र।

शुल्बसूत्र

शुल्ब का अर्थ होता है – नापने की डोरी। नाम के अनुरूप ही इन शुल्बसूत्रों में वेदी के लिए स्थान चुनने, नापने तथा रचना करने से सम्बद्ध विषयों का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। यज्ञवेदी निर्माण की रीति का विवेचन किये जाने के कारण शुल्बसूत्रों का घनिष्ठ सम्बन्ध श्रौतसूत्रों से है। क्योंकि श्रौत सूत्रों में जिन याज्ञिक विधानों का विवरण दिया गया था, उनकी प्रक्रिया का पूर्ण ज्ञान एवं विनियोग शुल्बसूत्रों के बिना हो ही नहीं सकता। ये शुल्बसूत्र भारतीय ज्यामिति के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान मैकडॉनल ने शुल्बसूत्रों की वैज्ञानिकता की घोषणा करते हुए कहा– 'इन सूत्रों में रेखागणित सम्बन्धी ज्ञान बहुत आगे बढ़ा हुआ पाया जाता है। अथवा शुल्बसूत्र ही भारत के गणितशास्त्रीय सर्वप्राचीन ग्रंथ कहे जा सकते हैं।'[2] प्रमुख उपलब्ध शुल्बसूत्र ये हैं। कृष्णयजुर्वेदीय – बौधायन आपस्तम्ब तथा मानव शुल्बसूत्र। शुक्लयजुर्वेदीय – कात्यायन शुल्बसूत्र।

भारतवर्ष में रेखागणित के प्राचीन इतिहास की जानकारी के लिए शुल्बसूत्रों का अध्ययन आवश्यक है। शुल्बसूत्र बेदांग के अन्तर्गत कल्पसूत्र का अंग हैं। कल्पसूत्र का मुख्य विषय है वैदिक कर्मकाण्ड। ये दो प्रकार के हैं – गृह्यसूत्र तथा श्रौतसूत्र, जिनमें गृह्यसूत्र का मुख्य विषय है विवाहादि संस्कारों का वर्णन है। श्रौतसूत्रों श्रुति में प्रतिपादित नाना यज्ञ–याज्ञों का विवरण किया गया है। शुल्बसूत्र इन्हीं श्रौतसूत्रों का एक उपयोगी अंश है।

सिद्धान्त की दृष्टि से तो प्रत्येक वैदिक शाखा का अपना विशिष्ट 'शुल्बसूत्र' होता है, परन्तु ऐसी बात नहीं है। कर्मकाण्ड के साथ सम्बद्ध होने के कारण शुल्बसूत्र यजुर्वेद की ही शाखा में पाये जाते हैं। यजुर्वेद की अनेक शाखाओं से शुल्बसूत्रों का अस्तित्व पाया जाता है। शुक्ल यजुर्वेद से सम्बद्ध एक ही शुल्बसूत्र है – कात्यायन – शुल्बसूत्र परन्तु कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित छः शुल्बसूत्र मिलते हैं – बौधायन, आपस्तम्ब, मानव, मैत्रायणीय, वाराह तथा वाधूल। इनके अतिरिक्त आपस्तम्ब–शुल्क (11/11) टीका में करविन्दस्वामी ने मशक – शुल्ब तथा हिरयण्केशी – शुल्ब का उल्लेख किया है, जो आजकल उपलब्ध नहीं हैं। आपस्तब शुल्ब (6/10) में हिरण्यकेशी–शुल्ब से एक उद्धरण भी उपलब्ध होता है। इन सात उपलब्ध सूत्रों में बौधायन–शुल्ब सबसे बड़ा है तथा प्राचीन है। इसमें तीन परिच्छेद हैं। प्रथम परिच्छेद में 116 सूत्र हैं, जिनमें मंगलाचरण के अनन्तर वर्णन है शुल्ब में विविध मानों का (सूत्र 3–21), याशिकवेदियों के निर्माण के लिए मुख्य रेखागणितीय तथ्यों का (सूत्र 22–62) तथा विभिन्न वेदियों के स्थान तथा आकार प्रकार का (सूत्र 63'116)। द्वितीय परिच्छेद में 86 सूत्र हैं, जिनमें वेदियों के निर्माण के सामान्य नियमों के वर्णन (1–61 सूत्र) के पश्चात गार्हपत्य–चिति तथा छन्दश्रिति [3] के बनावट का विवरण प्रस्तुत किया गया है। तृतीय परिच्छेद में 326 सूत्र हैं, जिनमें काम्य इष्टियों के 17 प्रभेदों के लिए वेदि के निर्माण का विशद विवरण है। इनमें से कई वेदियों की रचना बड़ी ही पेचीदी है, परन्तु अन्यों की रचना अपेक्षाकृत सरल है।

संदर्भ

1. अनीता कुमारी – संस्कृत विभाग, महात्मा गाँधी स्नातकोत्तर, महाविद्यालय फिरोजावाद।
2. सायण – ऋग्वेद भाष्य भूमिका
3. मैक्डानल – संस्कृत साहित्य का इतिहास, भाग–1 (हिन्दी) पृष्ठ–245.
4. आपस्तम्ब शुल्ब 6/10 – 'छन्दक्षिति' मन्त्रों के द्वारा निर्मित वेदि है। इसमें वेदि का निर्माता बाज की आकृति वाली वेदि की रूपरेखा पृथ्वी के ऊपर खींचती है तथा मन्त्रों को उच्चारण करती है।